विश्वत

" ऊर्जस्वला वर्चस्वला अतिनिष्चला विजये "
We are Energetic, Influential and are Always Committed

मास का सूत्र

विश्वतः विश्वविद्यालय मासिक पत्र
अंक २ माह : सितंबर 2024. क्रमांक २

"हिंदी, वैश्विक मंच पर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराती हुई, न केवल सांस्कृतिक आदान-प्रदान का सेतु बन रही है, बल्कि भाषा कौशल के क्षेत्र में नई संभावनाओं के द्वार भी खोल रही है। आज के डिजिटल युग में हिंदी का प्रचार-प्रसार नई तकनीकों और संवाद के माध्यमों से गति पकड़ रहा है, जिससे वैश्विक स्तर पर इसकी स्वीकार्यता बढ़ी है। हालांकि, इस यात्रा में चुनौतियाँ भी हैं—अनुवाद की सीमाएँ, भाषाई विविधता का सम्मान, और आधुनिक संदर्भ में हिंदी को प्रासंगिक बनाए रखना। लेकिन इन चुनौतियों का सामना करते हुए, हिंदी भविष्य के लिए असीम संभावनाओं का परिचायक बन सकती है।"

माननीय कुलाधिपति श्री संतोष चौबे की दृष्टि में हिंदी की वैश्विक पहचान

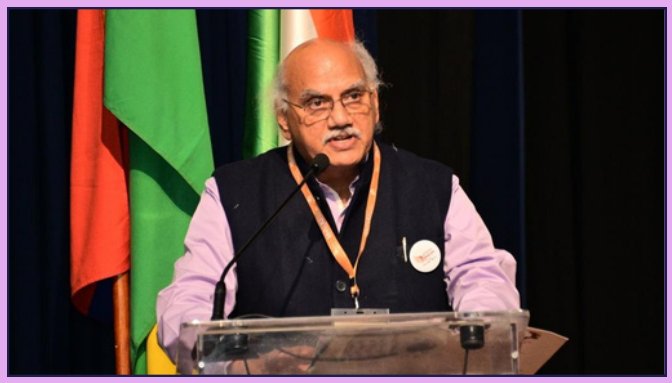

संपादकीय

हिंदी भाषा के वैश्विक प्रचार-प्रसार और भाषा कौशल के भविष्य की संभावना

हिंदी भाषा, जिसे भारत की आत्मा के रुप में देखा जाता है, अब वैश्विक मंच पर अपनी पहचान बना रही है। एक ओर जहाँ यह भाषा करोड़ों भारतीयों की मातृभाषा है, वहीं दूसरी ओर यह दुनिया भर में अपनी साहित्यिक, सांस्कृतिक और आर्थिक महत्ता को लेकर पहचानी जाने लगी है। डिजिटल युग के आगमन और इंटरनेट की व्यापक पहुँच के साथ, हिन्दी अब केवल भारत की सीमाओं तक सीमित नहीं रही, बल्कि विदेशों में भी इसकी लोकप्रियता बढ़ रही है।

आज की दुनिया में हिंदी भाषा सीखने और समझने की इच्छा रखने वाले लोगों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। संयुक्त राष्ट्र और विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा का प्रयोग इसकी वैश्विक स्वीकार्यता का प्रमाण है। कई देशों में हिंदी शिक्षण संस्थान खुल रहे हैं और हिंदी को दूसरी भाषा के रुप में अपनाने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। इसके पीछे हिंदी सिनेमा, संगीत, और डिजिटल सामग्री का बड़ा योगदान है, जो वैश्विक दर्शकों तक पहुँच रही है।

भविष्य में हिंदी भाषा कौशल और अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाएगा, विशेष रुप से उन लोगों के लिए जो वैश्विक स्तर पर कार्य करना चाहते हैं। आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में, भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं है, बल्कि यह ज्ञान और अवसरों की चाबी भी है। जो लोग हिंदी भाषा में निपुणता हासिल करेंगे, वे न केवल साहित्य और सांस्कृतिक धरोहर से जुड़े रहेंगे, बल्कि वे व्यापार, शिक्षा, पर्यटन और कूटनीति जैसे क्षेत्रों में भी अपने कौशल का लाभ उठा सकेंगे।

डिजिटल माध्यमों की प्रगति ने हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार को और भी आसान बना दिया है। ई-बुक्स, ऑनलाइन कोर्स, ब्लॉग्स, और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर हिंदी कंटेंट की उपलब्धता से यह भाषा अब घर-घर पहुँच रही है। इसके साथ ही, हिंदी में तकनीकी शब्दावली का विकास और वैश्विक व्यापारिक मंचों पर हिंदी का उपयोग एक नई दिशा में संकेत देता है।

भविष्य की दृष्टि से, हिंदी भाषा कौशल का विकास अत्यधिक संभावनाशील है। हिंदी भाषा में पारंगत लोग डिजिटल और वैश्विक अर्थव्यवस्था में अधिक सफल साबित हो सकते हैं। हिंदी साहित्य के अनुवाद और शोध कार्य भी नई पीढ़ी के लिए संभावनाओं के दरवाजे खोल सकते हैं।

अतः, यह कहना उचित होगा कि हिंदी भाषा का वैश्विक प्रचार-प्रसार केवल भाषा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक सांस्कृतिक आंदोलन का रुप ले चुका है। हिंदी भाषा में न केवल हमारी सांस्कृतिक विरासत संरक्षित है, बल्कि यह एक समृद्ध भविष्य की दिशा में मार्गदर्शन भी करती है।

नेहा शुक्ला

वृतांत

- डॉ. सी.वी. रामन विश्वविद्यालय, खंडवा में शिक्षक दिवस पर "सशक्त शिक्षकों के लिए संगोष्ठी" आयोजित की गई। मुख्य अतिथि डॉ. श्रीराम परिहार और डॉ. संध्या गंधे ने शिक्षकों की भूमिका पर विचार साझा किए। कुलगुरु डॉ. अरुण जोशी और कुलसचिव श्री रवि चतुर्वेदी ने 'विश्वत' डिजिटल न्यूज़लेटर का विमोचन किया। विश्वविद्यालय के उत्कृष्ट प्राध्यापकों को सम्मानित किया गया।
- डॉ. सी.वी. रामन विश्वविद्यालय में "हैप्पी खंडवा" डायलॉग डेश कार्यक्रम आयोजित हुआ। कुलगुरु डॉ. जोशी और कुलसचिव श्री रवि चतुर्वेदी ने युवाओं को कृषि, तकनीकी और शिक्षा के माध्यम से प्रेरित किया। इस कार्यक्रम में सामाजिक और पर्यावरण संरक्षण पर जोर दिया गया। इस कार्यक्रम में खंडवा शहर और हरदा के कई गणमान्य नागरिकों ने भागीदारी की और छात्रो के साथ अपने कृषि और व्यावसायिक अनुभव साझा किए।
- हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ डॉ. सी.वी. रामन विश्वविद्यालय में हुआ। माननीय कुलगुरु और कुलसचिव जी ने हिंदी के महत्त्व पर प्रकाश डाला। पुस्तक चर्चा, परिचर्चा और शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया।
- राष्ट्रीय अभियंता दिवस पर डॉ. सी.वी. रामन विश्वविद्यालय में "इंजीनियरिंग शिक्षा के भविष्य" पर पैनल चर्चा आयोजित की गई। कुलगुरु ने नए सत्र से 'स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग' शुरु करने की घोषणा की।
- गणेश चतुर्थी के अवसर पर विश्वविद्यालय में गणपति को छप्पन भोग का प्रसाद अर्पित किया गया। कार्यक्रम में सांस्कृतिक आयोजन और महाआरती का आयोजन किया गया।
- "स्मार्ट इंडिया हैकथॉन 2024" पर डॉ. सी.वी. रामन विश्वविद्यालय में कार्यशाला का आयोजन हुआ, जहाँ छात्रों के नवाचारी प्रोजेक्ट्स प्रस्तुत किए गए। कुलगुरु डॉ. जोशी ने छात्रों को अनुसंधान में अग्रणी बनने की प्रेरणा दी।
- आईसेक्ट कौशल विकास यात्रा का पंधाना में भव्य स्वागत हुआ, जिसमें छात्रों और युवाओं को करियर मार्गदर्शन दिया गया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर जागरुकता बढ़ाई गई।
- डॉ. सी.वी. रामन विश्वविद्यालय में हिंदी पखवाड़ा महोत्सव का आयोजन किया गया, जिसमें हिंदी और लोक बोलियों की महत्ता पर गहन चर्चा हुई। प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया।
- डॉ. सी.वी. रामन विश्वविद्यालय और सस्टेनोवेट क्लाइमेट सॉल्यूशंस के बीच जलवायु परिवर्तन और सतत शिक्षा पर एक ऐतिहासिक समझौता हुआ।
- विश्व फार्मासिस्ट डे के अवसर पर डॉ. सी.वी. रामन विश्वविद्यालय में फार्मेसी क्षेत्र पर पैनल चर्चा आयोजित हुई। छात्रों के लिए प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की गईं, और शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन हुआ और छात्रों को सम्मानित किया गया।

संपादकीय मंडल
संरक्षक : प्रो. डॉ. अरुण रमेश जोशी, कुलगुरु ,सीवीआरयू खंडवा,
प्रधान संपादक : श्री रवि चतुर्वेदी, कुलसचिव ,सीवीआरयू खंडवा,
कार्यकारी संपादक : प्रो.नेहा शुक्ला, मुख्य प्रकाशन अधिकारी
सदस्य : 1. डॉ. सीमा शर्मा, डायरेक्टर रिसर्च एंड इनोवेशन
2. डॉ. गणेश मलगाया, डायरेक्टर केंद्रीय प्रयोगशाला समन्वयक
3. प्रो. योगेश महाजन , तकनीकी अधिकारी, कुलगुरु सचिवालय
संकल्पना : श्री प्रमोद पटेल ,ग्राफिक डिजाइनर प्रकाशन विभाग
संचार एवं प्रसार : श्री मनदीप सिंह पंवार , अध्ययनशाला समन्वयक आर्यभट्ट स्कूल ऑफ डिजिटल लर्निंग
श्री हमज़ा मालिक , वनमाली केन्द्रीय ग्रंथालय

विश्वत

" ऊर्जस्वला वर्चस्वला अतिनिष्चला विजये "
We are Energetic, Influential and are Always Committed

विश्व में हिंदी

डॉ. सी.वी. रामन विश्वविद्यालय, खंडवा में हिंदी पखवाड़े का आयोजन: " विश्व में हिंदी "

डॉ. सी.वी. रामन विश्वविद्यालय, खंडवा में 14 से 30 सितंबर 2024 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस आयोजन का उद्देश्य हिंदी भाषा के विकास और प्रसार को प्रोत्साहित करना था। यह कार्यक्रम माननीय कुलाधिपति श्री संतोष चौबे जी की परिकल्पना के अनुरुप आयोजित किया गया, जो हिंदी भाषा के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। पखवाड़े का शुभारंभ कुलगुरु डॉ. अरुण रमेश जोशी के नेतृत्व में हुआ। उद्घाटन सत्र में उन्होंने हिंदी भाषा के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि हिंदी हमारी सांस्कृतिक धरोहर का अभिन्न अंग है और इसके संरक्षण एवं संवर्धन की आवश्यकता है। इस अवसर पर कुलसचिव श्री रवि चतुर्वेदी ने हिंदी के वैश्विक महत्व पर प्रकाश डालते हुए इसे हमारी पहचान का प्रतीक बताया। मुख्य वक्ता के रुप में कुलगुरु डॉ. अरुण रमेश जोशी ने अपने संबोधन में कहा, "हिंदी को अपनाकर हम अपनी सांस्कृतिक पहचान को मजबूत कर सकते हैं और इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी प्रासंगिक बना सकते हैं।"

हिंदी पखवाड़े के प्रमुख कार्यक्रम

पखवाड़े के दौरान कई शैक्षणिक और साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें छात्रों और शिक्षकों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया:

- 14 सितंबर: हिंदी कहानियों का परिचय और हिंदी भाषा कौशल के चार आयामों - बोलना, सुनना, पढ़ना, और लिखना - पर प्राध्यापकों द्वारा परिचर्चा।
- 18 सितंबर: कुलाधिपति श्री संतोष चौबे द्वारा "हिंदी का वैश्विक फलक और विश्वविद्यालयों की भूमिका" पर ऑनलाइन संवाद।
- 20 सितंबर: शुद्ध लेखन प्रतियोगिता, जिसमें छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।
- 21 सितंबर: हिंदी योग्यता प्रमाणन प्रतियोगिता का आयोजन।
- 24 सितंबर: हिंदी कविता पाठ, जिसमें कुलाधिपति श्री संतोष चौबे और शहर के प्रतिष्ठित कवियों की उपस्थिति रही।
- 26 सितंबर: वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन।
- 28 सितंबर: हिंदी कहानी पाठ का आयोजन, जिसमें छात्र-छात्राओं ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

समापन समारोह

- 30 सितंबर को समापन समारोह में विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। इस अवसर पर हिंदी के प्रति समर्पण हेतु शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन हुआ, जिसमें उपस्थित जनों और छात्रों ने हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपने योगदान की शपथ ली।

हिंदी पखवाड़े का मुख्य उद्देश्य छात्रों और शिक्षकों में हिंदी भाषा के प्रति प्रेम और जागरुकता को बढ़ावा देना था, और कार्यक्रम की सफलता इस उद्देश्य की पूर्ति को स्पष्ट रुप से दर्शाती है।

विश्वत: विश्व में हिंदी

विश्रुत : शोध एवं नवाचार

पोंषण सुरक्षा हेतु शोध : ग्रामीण क्षेत्रों में समाधान की दिशा में कदम

ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों में कुपोषण एक गंभीर समस्या के रुप में उभर रहा है, विशेषकर बच्चों, प्रसूताओं, और वृद्धों के बीच पहले, जनजातीय समुदाय विविध आहार और मोटे अनाज का सेवन करते थे, लेकिन अब सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से उन्हें केवल निम्न गुणवत्ता का गेहूं और चावल मिल रहा है, जिससे उनकी आहार विविधता में कमी आई है। इसके साथ ही, बाजार के दबाव के कारण किसानों ने पारंपरिक फसलों की जगह नकदी फसलों, जैसे सोयाबीन, की खेती शुरु कर दी है, जिससे पोषण स्तर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

इस चुनौती का समाधान खोजने के लिए डॉ. सी. वी. रामन विश्वविद्यालय, खंडवा के अनुसंधान एवं नवाचार संकुल द्वारा एक महत्वपूर्ण शोध किया गया । फार्मेसी अध्ययन शाला और उनकी टीम ने अरवी के आटे पर आधारित एक नवाचार विकसित किया है, जिसमें हानिकारक तत्वों को हटाकर इसे पोंषण-सुरक्षित और पौष्टिक बनाया गया है। इस आटे को अन्य अनाजों के साथ मिलाकर उच्च गुणवत्ता वाले खाद्य पदार्थ तैयार किए जा रहे हैं, जो भविष्य में ग्रामीण और जनजातीय समुदायों की पोंषण सुरक्षा को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

नवाचार

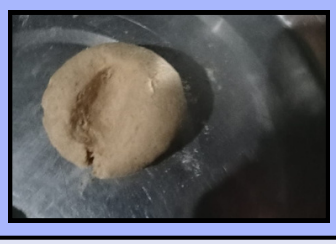

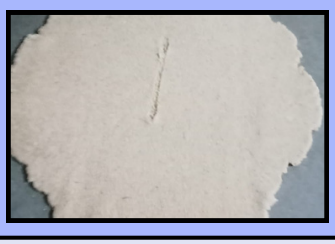

ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक और धार्मिक उत्सवों के दौरान स्टायरोफोम (थर्माकोल) का उपयोग खाद्य पदार्थ परोसने के लिए प्रचलित है, लेकिन यह पर्यावरण और स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा है। स्टायरोफोम का अपशिष्ट 600 वर्षों तक विघटित नहीं होता और जलस्रोतों को प्रदूषित करता है। इसके उपयोग से कैंसर जैसी बीमारियों का खतरा बढ़ता है।

इस गंभीर समस्या के समाधान के लिए, कृषि से निकलने वाले जैविक अपशिष्टों का उपयोग अब नवाचार के रुप में किया जा रहा है। डॉ. सी.वी. रामन विश्वविद्यालय, खंडवा के डॉ. कलाम कृषि प्रौद्योगिकी अध्ययनशाला के वैज्ञानिकों ने गहन शोध के बाद इन अपशिष्टों से कागज जैसे समकक्ष पदार्थों को विकसित करने के सफल प्रयोग किए हैं।

डॉ. सी.वी. रामन विश्वविद्यालय, खंडवा, वैश्विक अक्षय विकास के लक्ष्यों का पालन करते हुए इस दिशा में कई नवाचारी कदम उठा रहा है, जो भविष्य में पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिए महत्वपूर्ण साबित होंगे। ऐसे कदम न केवल ग्रामीण समुदायों के स्वास्थ्य और पर्यावरण की रक्षा करेंगे, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी स्थायी विकास की ओर मार्ग प्रशस्त करेंगे।

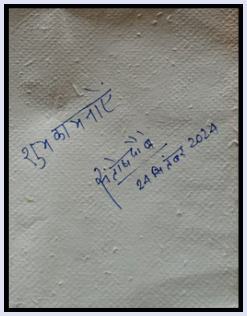

विश्वत

" ऊर्जस्वला वर्चस्वला अतिनिष्चला विजये "
We are Energetic, Influential and are Always Committed

छात्र विविधका : अनुभव आधारित शिक्षण

ग्रामीण क्षेत्र कार्य अनुभव (RAWE) कार्यक्रम: विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए एक अनिवार्य अनुभव

कार्यक्रम का महत्व:

"ग्रामीण क्षेत्र कार्य अनुभव (RAWE)" कार्यक्रम बीएससी कृषि पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसका उद्देश्य छात्रों को गुणवत्तापूर्ण, व्यावहारिक, और उत्पादन-उन्मुख शिक्षा प्रदान करना है, जिससे वे ग्रामीण जीवन और कृषि की वास्तविक चुनौतियों से अवगत हो सकें। यह कार्यक्रम छात्रों को कृषि क्षेत्र में व्यावहारिक ज्ञान और अनुभव प्राप्त करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करता है।

महत्वपूर्ण उद्देश्य:

1. ग्रामीण जीवन की समझ: ग्रामीण समाज के सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक पहलुओं को गहराई से समझने में मदद करना।
2. व्यावहारिक प्रशिक्षण: कृषि उत्पादन और प्रबंधन से जुड़े व्यावहारिक प्रशिक्षण के अवसर प्रदान करना।
3. संचार कौशल का विकास: छात्रों को किसानों और कृषि विशेषज्ञों से संवाद करने के कौशल का विकास करना।
4. कृषि तकनीकों की जानकारी: छात्रों को पारंपरिक और आधुनिक कृषि तकनीकों से अवगत कराना।
5. समस्या समाधान क्षमता: छात्रों में समस्याओं के समाधान की क्षमता और आत्मविश्वास को विकसित करना।
6. कृषक परिवारों से सतत संपर्क: छात्रों को ग्रामीण परिवारों के साथ सीधा संपर्क कराते हुए कृषि से संबंधित विभिन्न पहलुओं का अनुभव प्रदान करना।
7. सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था का प्रत्यक्ष अध्ययन: छात्रों को ग्रामीण सामाजिक, आर्थिक, और पर्यावरणीय व्यवस्थाओं का प्रत्यक्ष अनुभव देना।
8. कृषि के सभी आयामों का अनुभव: कृषि विपणन, मूल्य संवर्धन, और लागत से जुड़े व्यावहारिक ज्ञान को विकसित करना।

कार्यक्रम के परिणाम:

RAWE कार्यक्रम ने छात्रों को ग्रामीण कृषि प्रणाली के विभिन्न पहलुओं को समझने का अवसर प्रदान किया। उन्होंने किसानों की आर्थिक स्थिति, उनके द्वारा उपयोग की जाने वाली तकनीकों और उनके सामने आने वाली चुनौतियों का अध्ययन किया। इससे छात्रों की व्यावहारिक और तकनीकी क्षमताओं में सुधार हुआ और वे किसानों के साथ सहयोग कर कृषि समस्याओं का समाधान खोजने के लिए सक्षम बनें।

RAWE कार्यक्रम ने छात्रों को व्यावहारिक अनुभव के लिए तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह कार्यक्रम छात्रों को कृषि से जुड़ी चुनौतियों को समझने और उनके समाधान के लिए आवश्यक कौशल और दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक रहा है।

आजीविका : बीज से बाजार तक

बीज उत्पादन में डॉ. सी.वी. रामन विश्वविद्यालय, खंडवा का योगदान

डॉ. सी.वी. रामन विश्वविद्यालय, खंडवा न केवल शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी है, बल्कि किसानों के साथ मिलकर कृषि में तकनीकी विकास और अनुसंधान कार्यों में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। विश्वविद्यालय का उद्देश्य निमाड़ अंचल के किसानों को खेती में इष्ठतम लाभ दिलाना है। इसी उद्देश्य के तहत, विश्वविद्यालय ने हरदा में "रामन क्षेत्रीय संसाधन केंद्र" की स्थापना की है, जहां किसानों के साथ साझेदारी में उच्च गुणवत्ता वाले बीजों के विकास पर कार्य किया जा रहा है।

उच्च गुणवत्ता वाले बीज, खेती में उत्पादन वृद्धि और लागत में कमी के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बीज फसल उत्पादन की बुनियादी इकाई होते हैं और भौतिक एवं आनुवंशिक रुप से शुद्ध होने चाहिए। अच्छी गुणवत्ता के बीजों के उपयोग से फसल के उत्पादन में भी वृद्धि होती है। बीजों को उनकी आनुवंशिक क्षमता और गुणवत्ता के आधार पर निम्नलिखित चार प्रमुख प्रकारों में वर्गीकृत किया जाता है:

केंद्रक बीज (Nucleus Seed), प्रजनक बीज (Breeder Seed), आधार बीज (Foundation Seed),प्रमाणित बीज (Certified Seed)

डॉ. सी.वी. रामन विश्वविद्यालय द्वारा किसानों के साथ भागीदारी में बीज उत्पादन से संबंधित प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। यह कार्य मध्यप्रदेश राज्य बीज प्रमाणीकरण संस्था, भोपाल द्वारा पंजीकृत है, जिससे किसानों को उच्च गुणवत्ता के बीज प्राप्त हो सकें और वे अपनी फसलों का अधिकतम मूल्य प्राप्त कर सकें।

विश्वविद्यालय ने रबी और जायद की फसलों के दौरान निम्नलिखित फसलों का उत्पादन किसानों के साथ मिलकर किया:

चना फसल की RVG-202 किस्म के आधार बीज का उत्पादन 7 किसानों द्वारा किया गया, जिससे कुल 341 क्विंटल बीज का उत्पादन हुआ। मूंग की IPM-410-3 किस्म के आधार बीज का उत्पादन 3 किसानों द्वारा किया गया, जिससे 42 क्विंटल बीज प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त, मूंग की Mh-421 किस्म के आधार बीज का उत्पादन 2 किसानों द्वारा किया गया, जिससे कुल 36 क्विंटल बीज प्राप्त हुआ। अंततः, मूंग की PDM-139 किस्म के आधार बीज का उत्पादन 4 किसानों द्वारा किया गया, जिससे 113 क्विंटल बीज का उत्पादन हुआ।

डॉ. सी.वी. रामन विश्वविद्यालय किसानों को उच्च गुणवत्ता के बीज उपलब्ध कराकर और उन्हें प्रशिक्षित करके, कृषि क्षेत्र में निरंतर योगदान दे रहा है। इसका उद्देश्य किसानों की उपज बढ़ाना और उन्हें फसल का अधिकतम मूल्य दिलाना है।

DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY
Madhya Pradesh, Khandwa AN AISECT GROUP UNIVERSITY
RNTU Rabindranath TAGORE UNIVERSITY
AISECT UNIVERSITY JHARKHAND, HAZARIBAG AN AISECT GROUP UNIVERSITY
DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY Chhattisgarh, Bilaspur AN AISECT GROUP UNIVERSITY
SCOPE GLOBAL SKILLS UNIVERSITY CENTRAL INDIA'S 1ST SKILLS UNIVERSITY
DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY Bihar, Vaishali AN AISECT GROUP UNIVERSITY